वर्ष 7, अंक 6

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

जनवरी 2024 ₹ 65

ज़िन्दगी का बायस्कोप

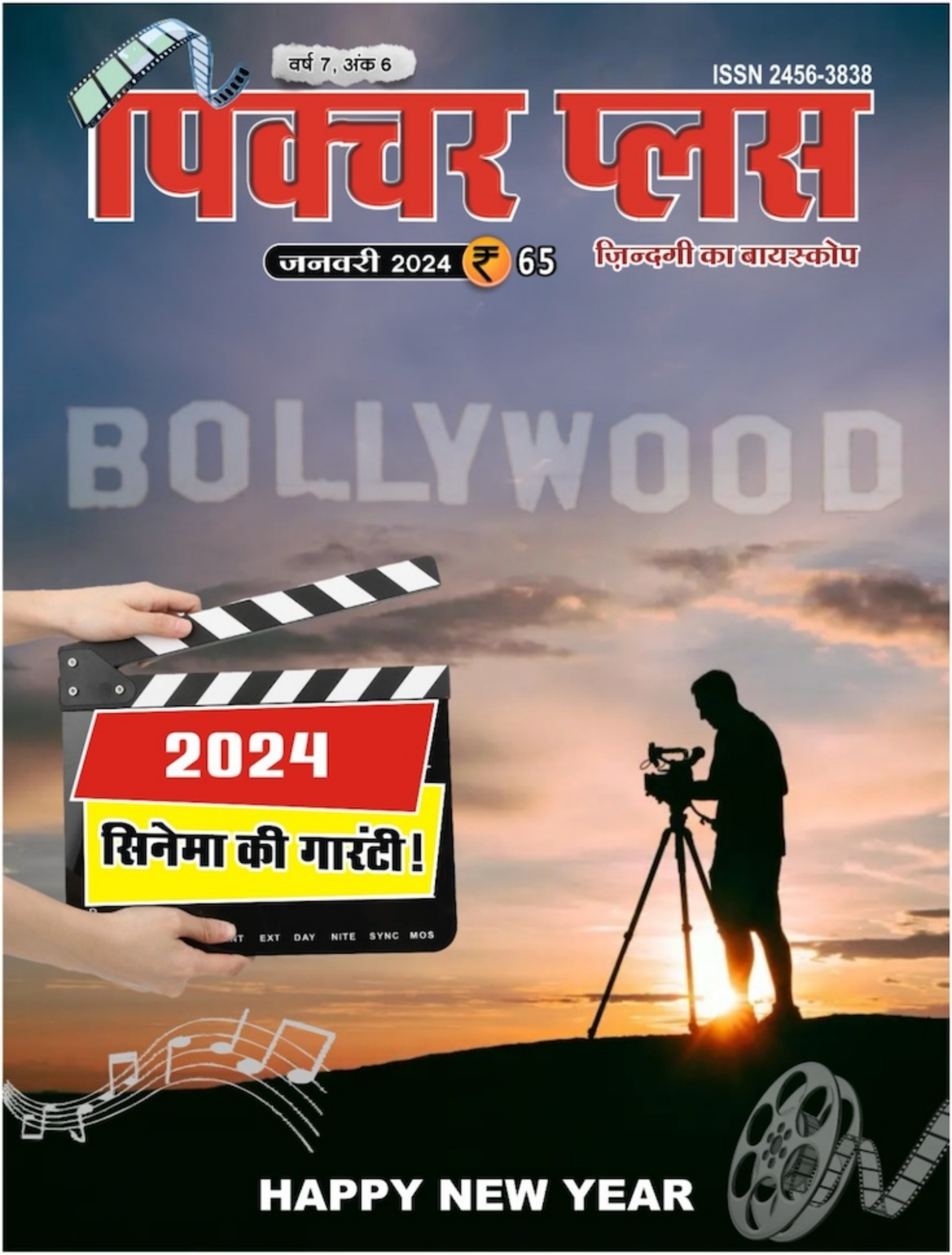

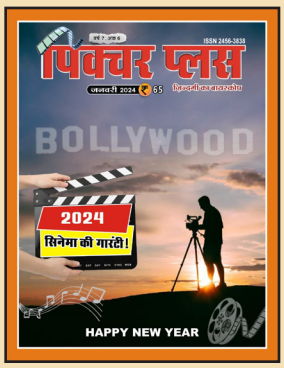

ISSN : 2456-3838
Licence No. F2 (P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष 7 अंक 6 जनवरी, 2024
(मासिक/द्विभाषिक हिंदी-अंग्रेजी)

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन : शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, गली नंबर 2,
प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1
दिल्ली-110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

आप डिजिटल संस्करण को नॉटनल
(www.notnul.com) से ख़रीद सकते हैं।

संपर्क : 9313677771
ईमेल : pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति तथा लेखक-प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(सभी चित्र इंटरनेट से साभार)
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

05 **संपादकीय** : चलती का नाम गाड़ी : 24 कैरेट सिनेमा !

माधुरी के वे दिन

06 **अरविन्द कुमार :** मिर्ज़ा ग़ालिब' के ग़ालिब की दर्द भरी कहानी
कवर स्टोरी: हमारा सिनेमा कैसा हो!
10 **प्रहलाद अग्रवाल :** सिनेमा का भविष्य उज्ज्वल है
13 **मुजफ्फर अली :** रूह तक पहुंचने वाला सिनेमा चलेगा
14 **अशोक मिश्र :** सिनेमा सार्थक हो,बकवास नहीं
16 **अतुल श्रीवास्तव :** फिल्में जो मनोरंजन करे, इमोशन में बहा ले जाये
19 **बृजेंद्र काला :** मनोरंजन के साथ संदेश भी दें
21 **नरेन्द्र नाथ पांडेय :** सिनेमा वही जो दर्शक मन भाये
23 **गौतम सिद्धार्थ :** फिल्म बने ऐसी जो दिमाग से डिलीट न हो
26 **इक़बाल रिज़वी :** हिंसा और नफ़रत से निकलना होगा
27 **डॉ. सुरभि विप्लव :** सिनेमा अपनी ताकत पहचाने
30 **जयनारायण प्रसाद :** 29वां कोलकाता अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव
32 **रजा मुराद :** जूनियर महमूद जैसा चाइल्ड सुपर स्टार आर्टिस्ट कोई नहीं
34 **ज्ञानेश उपाध्याय :** दिलीप कुमार के अभिनय के राज कपूर भी दीवाने थे
39 **प्रबोध उनियाल :** सौमित्र चटर्जी की 'अपुर संसार'
40 **विनायक धनेश्वर :** चली चली रे पतंग मेरी चली रे...
41 **जयनारायण प्रसाद :** पैराडाइज पीरियड के प्राइड... (सिनेमा हॉल की कहानी)
48 **फिल्म पत्रकारिता - 11 :**
विनोद तिवारी : पटकथा की कहानी
52 **पुस्तक प्लस- अजय कुमार शर्मा :** देव-नामा : देव आनंद की जिजीविषा का दस्तावेज
55 **Global Screen :** Most Googled Movies Globally in 2023
58 **गीतकार : एआर आजाद**

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं. 2, प्रताप नगर मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक-संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ/439/ नारायणा विलेज, नई दिल्ली-110026 से मुद्रित।

आप का खत मिला

पठनीय सामग्री के लिए बधाई

'पिक्चर प्लस' आज ही मिली। हर अंक की तरह यह अंक भी संग्रहणीय है। जिस मेहनत और लगन के साथ आप पत्रिका प्रस्तुत कर रहे हैं उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। इस महंगाई के समय आपने स्वस्थ पत्रिका का मूल्य अस्वस्थ बनाए रखा है जो कि कम से कम रु.100 होना चाहिए। इसके पाठक विशिष्ट रुचि संपन्न हैं और हर हाल में इसके साथ जुड़े रहना चाहेंगे । हिंदी में फिल्म संबंधित ऐसी पठनीय सामग्री निरंतर उपलब्ध कराने के लिए बधाई।

विनोद तिवारी, पुणे

शैलेंद्र के गीतों जैसा अहसास कराता अंक

संजीव भाई, इस विशेष और सम्पूर्ण अंक के लिए बधाई ही बधाई! बधाई शब्द भी छोटा है तो फिर आपके विवेक और दृष्टि को शैलेंद्र जैसे दृष्टा को उनके लायक ही आसमान देने के लिए साधुवाद! अरविंद कुमार जी की स्मृति और लेखनी ने कितने बीते हुए अनमोल पलों से मिला दिया और पारिवारिक उन परिस्थितियों से भी जिनमें से शैलेंद्र के हिम्मती और शालीन परिवार को गुजरना पड़ा होगा। शैलेंद्र जी के इस पुरनूर परिवार के विमर्श को भी शामिल कर आपने भावक के सादृश्य कितने ही चित्र और चिंताओं प्रामाणिक खींच दिया है। उनके 'बाबा' के कितने ही अलोने-सलोने चित्र भी यहां अंकित हो गये हैं। सोचा था पूरे अंक की इस नूतन आकाशगंगा को पार करने के बाद ही मुड़कर देखूंगा। पर अभी तो तीन बड़े हस्ताक्षरों की आत्मिकता से गुजरना शेष है। विजय पाडलकर, प्रहलाद अग्रवाल और अनुराधा ओस इन अनुभवियों के दृष्टांत और स्वीकृतियों में जावेद साहब की तरह ही आम आदमी के इस वली की ऊंचाइयों को और गहरे समझना बाकी है। इंद्रजीत सिंह जी की कवि से रागमयता ने तो और भी बड़ा काम वह सार्थक पहल कर ही दिया है शैलेंद्र को साहित्य अकादमी के मंच से दस्तक देकर! और अपनी कलम से उन्हें रचकर! अवाम के दर्द को राग में ढालने की यह विरल परम्परा अब नहीं रही, जिसकी तरफ़ जावेद अख़्तर ने गहरा संकेत किया है। वाकई ऐसे पब्लिक फिलॉस्फर्स के लिए अब यह धरती तरसेगी! नरेश सक्सेना यह कह सकते हैं कि शताब्दियों के पार जाने वाले गीत हैं उनके!! जो एक बड़ी- रवायत का और संघर्षों का कलेजा चीरकर हम तक पहुंचे हैं। हिंदी सिनेमा का वह स्वर्णिम काल आए ना आए, पर यह अंक शैलेंद्र के साथ उस युग के गीतों का भी बार-बार अहसास जगाएगा। यही इस अंक का एक हासिल है। जिसमें कितनी ही फिल्मों के छन्दस आसमान सारभूत होकर समा गए हैं।

प्रताप सिंह, गाजियाबाद

एक और संग्रहणीय अंक

पिक्चर प्लस का दिसंबर अंक महीना खत्म होने के पांच दिन पूर्व प्राप्त हुआ। मूर्धन्य फिल्म गीतकार स्व. शैलेंद्र पर केन्द्रित और उनके "फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी" सरीखे अमर गीत को प्रतिध्वनित करता यह अंक वाकई फिल्म रसिकों के लिए पठनीय और संग्रहणीय है। संपादक संजीव श्रीवास्तव ने जिस मनोयोग से इस अंक के लिए रोचक सामग्री जुटाई है, उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। आशा है नए साल में पिक्चर प्लस का आकर्षक स्वरूप और निखरकर सामने आएगा। यही शुभकामनाएं।

विनोद नागर, भोपाल

सिनेमा घर पर भी अंक निकालें

बहुत-बहुत धन्यवाद संजीव जी। पत्रिका प्राप्त हो जाती है। इस बार शैलेंद्र जी के ऊपर बहुत अच्छा अंक निकला। सभी अंक अच्छे निकल रहे हैं। सिनेमा घर के इतिहास के ऊपर भी कोई अंक निकालें आप। अभी भी बहुत से फिल्मप्रेमी हैं जो पत्रिका पढ़ना चाहते हैं मोबाइल पर नहीं, हाथ में लेकर। आपका यह प्रयास सफल रहा और हम कामना करते हैं कि हर साल कुछ नहीं जानकारी के साथ यह फिल्म पत्रिका निकलते रहे।

विनोद जोशी, इंदौर

पिक्चर प्लस कमी कर रही पूरा

1970 के आस-पास 92, दरियागंज से तीन फिल्मी मासिक पत्रिकाएं, नवचित्र पट, प्रिया व ललिता निकलती थी, जिनमें उस माह में प्रदर्शित फिल्मों की स्क्रीन प्ले व कुछ की संक्षिप्त कहानी प्रकाशित होती थी। अब तो खाली पिक्चर प्लस ही एक मात्र पत्रिका है जो पुरानी फिल्मी पत्रिकाओं की कमी पूरी कर रही है। हर माह इसका इंतजार रहता है।

सीएम अग्रवाल, देहरादून।